INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.828 (SJIF 2022)

स्वदेशी आंदोलन काल मे आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना

(Concept of Self-Reliant India during the Swadeshi Movement)

बिजेंद्र कुमार

श्रीवास्तव शोधार्थी, (इतिहास विभाग)
राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय सिंगरामऊ जौनपुर
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उत्तर प्रदेश)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/03.2022-57138787/IRJHIS2203007

प्रस्तावना :

वर्तमान भारतीय राजनैतिक परिदृश्य में अन्य अनेक महत्वपूर्ण विषयों के साथ आत्मनिर्भर भारत की संकलपना की चर्चा बहुत जोरा से चल रही है। विभिन्न पत्र – पत्रिकाओं, अखबारों एवे मीडिया हाउसों में यह चर्चा का केंद्र बिंदु है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा परिकल्पित नए भारत की परिकल्पना भारत निर्माण अभियान है। 12 मई 2020 को हमारे प्रधानमंत्री राष्ट्र के लिए एक स्पष्ट आहवान किया जिसमें आत्मनिर्भर भारत अभियान को एक शुरूआत दी गई और 20 लाख करोड़ रूपए के विशेष आर्थिक और व्यापक पैकेज की घोषणा की। उन्होंने आगे चलकर आत्मनिर्भर भारत के 5 स्तंभो– (अर्थव्यवस्था बुनियादी ढांचे प्रणाली जीवन्त जनसांख्यिकी माँग) को रेखांकित किया वैश्वीकरण के इस युग में सभी देश आपस में जुड़े हुए हैं ऐसे में आत्मनिर्भरता यानी (Self Reliance) की परिभाषा भी बदल गई है। आत्मनिर्भरता आत्म क्रेंद्रित से अलग है। भारत 'वसुधैव कुटुंबकम' में विश्वास रखता है। भारत दुनिया का ही एक हिस्सा है, अगर भारत प्रगति करता है तो ऐसा करके दुनिया की प्रगति में योगदान देता है। आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में वैश्वीकरण का बहिष्कार नहीं किया जाएगा बल्कि दुनिया के विकास में मदद की जाएगी इसलिए हमारे लिए आत्मनिर्भर भारत से मतलब दुनिया से जुड़े रहते हुए आर्थिक विकास के साथ जीवन की गुणवत्ता को बेहतर करना है।

आत्मनिर्भर भारत के उद्देश्य :

सिर्फ कोविड–19 महामारी सके दुष्प्रभाव से लड़ना ही नहीं है, बल्कि भविष्य के भारत का पुनर्निमाण करना भी है ताकि भारत अपनी घरेलू मांग को पूरा कर सके और अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए सक्षम बनकर आगे बढ़ सके।

मुख्य भाग :

कहते है कि कुछ बुरे शासक भी अच्छा परिणम पैदा करतके हैं। लॉर्ड कर्जन ने भारतीय राष्ट्रवाद को कमजोर करने के लिए बगाल विभाजन किया किंतु इसके विपरीत भारतीय राष्ट्रवाद उग्र हो गया और अंग्रेज का

विरोध विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिक्रिया स्वरूप स्वदेशी आंदोलन के रूप में सामने आया।

बंगाल विभाजन विरोधी आंदोलन आंरभ तो 1903 में हो चुका था, लेकिन विभाजन की योजना के 1905 में अन्ततः घोषित और लागू किए जाने के बाद वह और भी मजबूत और भी संगठित हो गया। आरभिक उद्देश्य विभाजन को रद्द करना था लेकिन जल्द ही वह एक अधिक व्यापक आधार वाला आंदोलन बन गया इतिहासकार **रजत रे** ने लिखा है कि **''बंगाली समाज के राजनीतिक ढांचे में एक क्रांति से कम नहीं थी''**। 1904 में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपने भाषण ''स्वदेशी समाज'' में उन्होंने आत्मशक्ति का रचनात्मक कार्यकम सामने रखा और जुलाई 1905 के बाद यही पूरे बंगाल का मूल मंत्र बन गया तथा कल– कारखाने कूटीर उद्योग आदि खुलने लगे। बारीसाल के एक अध्यापक इश्विन कुमार दत्त के नेतृत्व में गठित स्वदेशी बांधव समिति की 159 शाखाऐं पूरे जिले के दूर–दराज इलाकों फैली थी। इस सतिति अपने अपने सदस्यों के शारीरिक और नैतिक प्रशिक्षण दिया। स्वदेशी दस्तकारी का भी प्रशिक्षण दिया गया औ मुकदमे निपटाने हेतु पंच अदालते बनाई। अगस्त 1906 का वारीसाल समिति ने 89 पंच अदालतो के जरिए 523 विवादों का निपटारा किया।

स्वदेशी आंदोलन आत्मनिर्भता हेतु अपने प्रचार के लिए पारंपरिक त्यौहारो, तीजो धार्मिक मेलों, लोक संगीत, लाकनाटय मंचो का भी सहारा लिया। गणपति महोत्सव, शिवाजी जयंती को तिलक ने बहुत लोकप्रिय बनाया और इसके माध्यम से स्वदेशी आंदोलन को बढ़ावा मिला जिस प्रकार स्वदेशी आंदोलन में इन चीजों का सहारा लिया उसी प्रकार वर्तमान में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय योगी आदित्यनाथ जी ने भी अर्थव्यवस्था को भी एक सुदृढ़ बनाने हेतु यूपी में एक फिल्म सिटी बनाने की घोषणा की जिसमे आत्मनिर्भर भारत की झलक दिखाई देती है।

स्वदेशी आंदोलन नें आत्मनिर्भरता, आत्मशक्ति का नारा दिया, आंदोलनकारी नेताओं का मानना था कि सरकार के खिलाफ संघर्ष चलाने के लिए जनता में स्वालबंन की भावना भरना नितांत आवश्यक है अर्थात– स्वालंबन व आत्मनिर्भरता का प्रश्न स्वाभिमान आदर और आत्मविंश्वास के साथ जुड़ गया। गावों के आर्थिक व सामाजिक उत्थान हेतु गांव में रचनात्मक कार्य शुरू करने की जरूरत महसूस की गई लागों में यह चेतना पैदा करने की अपनी प्रगति के लिए वे स्वंय आगे आए रचनात्मक कार्यो मे सामाजिक सुधार लागू करना तथा जाति–प्रभुत्व,बाल– विवाह,दहेज,शराबखोरी जैसी सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जेहाद शामिल था। आत्मनिर्भरता के लिए स्वदेशी अथवा राष्ट्रीय शिक्षा की भी जरूरत बड़ी शिद्दत के साथ महसूस की गई। टैगोर के शांतिनिकेतन की तर्ज पर बंगाल–नेशनल कॉलेज की स्थापना 1906 मे की गई। अगस्त 1906 मे राष्ट्रीय शिक्षा परिषद का गठन हुआ शिक्षा का माध्यम वे देशी भाषाऐ बनी जो क्षेत्र विशेष में प्रचलित थी। उद्देश्य था कि शिक्षा घर–घर पहुंचे। तकनीकी शिक्षा के लिए बंगाल इस्टीट्यूट की स्थापना की गई।

आत्मनिर्भरता हेतु लगभग इसी समय पूरे भारत में तमाम स्वदेशी कल–कारखाने स्थापित हुए जिसे बहत से लोगों को रोजगार जो अंग्रेजी शासन से किसी ना किसी प्रकार ाक त्रस्त थे मार्च 1904 मे जोगेंद्र चंद्र घोस ने एक समिति की स्थापन की लिसका लक्ष्य था, विद्यार्थियो को तकनीकी प्रशिक्षण हेतु बाहर प्राय जापान भेजने के लिए धनराशि जुटाना। अगस्त 1906 में दी बंगलक्ष्मी काटन मिल्स की स्थापना बड़ी जोर–शोर से हुई इसके जिए पहले से वर्तमान से श्री रामपुर सयंत्र से साज – सामान की आपूर्ति गई। चीनी मिट्टीके कारखने क्रोम, टैनिग, दियासलाई उद्योग एवे सिगरेट, साबुन, माचिस के कारखाने चर्म उद्योग, बैंक, बीमा कंपनियां अस्तित्व में

आई। उदाहरण के लिए बी सी राय की बंगाल–केमिकल फैक्ट्री।

महिलाएं सदैव से पुरूषं के साथ कंधे से कधां मिलाकर समाज की प्रगति में योगदान दिया है। महिलाओं की सक्रिय भूमिका स्वदेशी मे भी देख जा सकती है। **सराजिनी बोस, श्रीमती गांगुली, कंमुदिनी देवी, सुशीला देवी, हर देवी** आदि प्रमुख महिलाएं उलेखनीय है। ये एक तरफ धरना प्रदर्शन जैसे कार्यो मे शामिल हुए तो दूसरी ओर चरखा भी काटती थी अर्थात स्वदेशी पर बल दिया जा रहा था तो विदेशी वस्तुओं को न लेकर वे चरखे के माध्यम से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति भी कर रही थी मतलब आत्मनिर्भरता हेतु स्वदेशी पर बल दे रही थी। लाहौर की एक सक्रिय महिला हर देवी का नाम उल्लेखनीय हैं जिन्होंने **भारत भागनी** नामक पत्रिका का संपादन किया था और लोगों में स्वदेशी की भावना को भी प्ररित किया।

कला, खासकर चित्रकला के क्षेत्र के अंतर्गत उल्लेखनीय कार्य हुआ । स्वदेशी पर बल देने के क्रम मे अवनींद्र नाथ टैगोर और नंदलाल बोस का नाम उल्लेखनीय है। अवनींद्रनाथ टैगोर ने स्वदेशी चित्रकला के तहत एक बगंमाता का चित्र बनाया जो भारत माता के नाम से लोकप्रिय है। नंदलाल बोस कला की छात्रतृत्ति पाने वाले पहले भरतीय बने और आगे चलकर गांधी जी की दांडी यात्रा चित्रों का निर्माण किया

स्वदेशी आंदोलन में आत्मनिर्भरता के राष्ट्रवादी फलक के अपेक्षित परिणम भी भविष्य में मिले आज हम अंतरराष्ट्रवाद या वैश्वीकरण के युग में हैं अतः आत्मनिर्भरता की अवधरणा को पुंर्नपरिभाषित करने की जरूरत है। प्रस्तुत आलेख में स्वदेशी आंदोलन काल मे आत्मनिभर भारत की संकल्पना का ऐतिहासिक दृष्टिकोण से विवेचन करने का प्रयास किया गया है।

निष्कर्ष :

भारत प्राचीन काल से ही लगभग 1800 ई के आस–पास भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की अर्थव्यवस्था से सर्वश्रेष्ठ थी। आज हम लोकल फार वोकल या नवाचार नव प्रवर्तन प्रयोग कर आत्मनिर्भरता की बात करते हैं उसका बीजरोपण औपपिनवशिक काल मे ही हो चुका था। इसके उपरांत हम देखते हैं कि भारतीय उद्योगपति कांग्रेस नेताओं को वित्तीय तथा मानसिक समर्थन देते रहे गांधी जी का भी यहही मानना था कि देश को आत्मनिार्भर बनाने हेतु लघु एवं कुटीर उद्योगो को बढ़ावा दिया जाए तभी हम अपने देश से गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी अशिक्षा आदि क्षेत्रों मे सुधार कर शुद्ध अर्थव्यवस्था को गति दे सकते हैं । गांधी जी ने स्वयं ग्राम उद्योगुं को प्रोत्साहन दिया जिससे भारतीय हस्तशिल्प को जीवित रखने मे भी सहायता मिली। वर्तमान समय मे प्रधानमंत्री ने आत्मनिर्भर के जिन तत्वो को **(अर्थव्यवस्था, बनियादी ढाचा प्रणाली जीवन जनसांख्यिकी, मांग)** सुदृढ़ करने की बात कही वह स्वदेशी आंदोलन काल में विद्यमान थे। 18 फरवरी 2021 को भारत ने कोविड टीको की आापूर्ति 25 देशों को की गई है जो स्वयंममेव दर्शाता है कि भारत अब आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है भारत विश्व की तेजी से बढती हुई अर्थव्यवस्था है भविष्य में भारत को अपने पडोसी देश चीन एवं यूरोप देश के प्रमुख देश एवं अमेरिको जैसी अर्थव्यवस्था से चुनौतियो का सामने करना पड़ेगा। अतः हमें अपने देश के अंदरूनी चुनौतियों दूर करके आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ा कर भारत को विश्व की आर्थिक महाशक्ति की ओर ले जा सकते है। तभी आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना की वास्तविक उद्देश्य पूर्ण होगा।

सन्दर्भ सूची :

(1) चंद्र विपिन, मृदुला मुखर्जी, आदित्य मुखर्जी एवं अन्य (2009) भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, केंद्रीय माध्यम

कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली, विश्वविद्यालय, 29 वां संस्करण।

(2) बद्दोपाध्य, शेखर (2015) पलासी से विभाजन तक और उसके बाद आधुनिक भारत का इतिहास, ओरियंट ब्लैकस्वान प्राइवेट नई दिल्ली, दूसरा संस्करण।

(3) ग्रोवर बी एल, मेहता अलका यशपाल (2008) आधुनिक भारत का इतिहास – एक नवीन मूल्यांकन, एस चंद्र एंड कंपनी लिमिटड, नई दिल्ली 28 वां संस्सरण।

(4) सरकार सुमित (2009) आधुनिक भारत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 16 वां संस्करण।